VAJIRAO & REDDY INSTITUTE
India's Top Potential Training Institute for IAS

+918988885050
+918988886060

www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

# TODAY'S ANALYSIS

## (आज का विश्लेषण)

## (04 April 2024)

### Sources:

The Hindu, The Indian Express, The Economics Times & PIB

### Important News:

- भारत के लिए भू-रणनीतिक महत्व के नवीन क्षेत्रों का उदय
- ताइवान में भीषण भूकंप का आना और 'रिंग ऑफ फायर'
- भारत को विकसित देश बनाने में परमाणु ऊर्जा महत्वपूर्ण: IIMA का अध्ययन

ADDRESS:
19/1A Shakti Nagar, Nagiya Park Near Delhi University, New Delhi - 110007 (India)

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

# भारत के लिए भू-रणनीतिक महत्व के नवीन क्षेत्रों का उदय:

## परिचय:

- भारत और श्रीलंका के बीच पाक स्ट्रेट में स्थित कच्चातिवू द्वीप पर भारत सरकार का आश्चर्यजनक ध्यान, तमिलनाडु के चुनावी मानचित्र में सेंध लगाने के लिए सत्तारूढ़ दल के दृढ़ संकल्प का एक हिस्सा है। लेकिन पिछले दशक में भारतीय विदेश नीति के मूल्यांकन करने पर हम पाते हैं कि दक्षिण प्रशांत से अफ्रीकी तट तक द्वीप राज्य और क्षेत्र भारत के बदलते भू-रणनीति में नए छोर बन गए हैं।

- उल्लेखनीय है कि चाहे वह मालदीव हो, या प्रशांत द्वीप समूह में संसाधन संपन्न पापुआ न्यू गिनी के साथ भारत की नई भागीदारी, मॉरीशस के अगालेगा द्वीप पर बुनियादी ढांचे का संयुक्त विकास, पूर्वी हिंद महासागर के द्वीपों में ऑस्ट्रेलिया के साथ सहयोग, या अंडमान और लक्षद्वीप को विकसित करने पर वर्तमान सरकार का ध्यान देना हो, इन सब मे द्वीप, भारत की नई भूराजनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनकर उभरे हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

## भारतीय राजनयिक विमर्श में "इंडो-पैसिफिक" क्षेत्र का उदय:

- दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों के बारे में भारत की रणनीतिक कल्पना और हम उनका वर्णन कैसे करते हैं, इसको लेकर पिछले दशक में काफी बदलाव आया है। उदाहरण के लिए, "इंडो-पैसिफिक" क्षेत्र पर ही विचार करें।
- "इंडो-पैसिफिक" क्षेत्र का विचार पहली बार 2007 में भारतीय संसद में एक भाषण में दिवंगत जापानी प्रधानमंत्री शिंजो अबे द्वारा प्रस्तावित किया गया था। आबे ने हमसे "दो महासागरों के संगम" - हिंद और प्रशांत - पर विचार करने का आग्रह किया। उस समय इस विचार का भारत की कूटनीतिक हलकों में काफी प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। दिल्ली में संशयवादियों ने “इंडो-पैसिफिक” विचारधारा को चीन को "घेरने" के लिए भारत को "फंसाने" की "अमेरिकी साजिश" के रूप में देखा गया।
- पहली बार 2018 में सिंगापुर में वार्षिक शांगरी ला डायलॉग में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने भाषण में इस विचारधारा का उल्लेख किया।

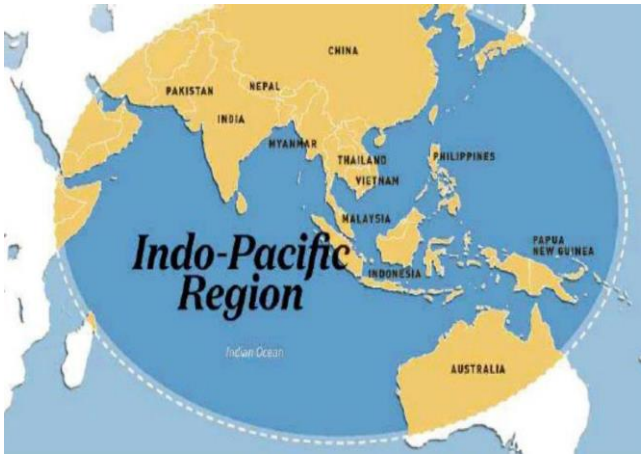

- उल्लेखनीय है कि चीन के साथ भारत के बिगड़ते रिश्ते, जो 2013, 2014 और 2017 में सैन्य संकटों की एक श्रृंखला से चिह्नित थे, दिल्ली के पुनर्विचार का एक महत्वपूर्ण कारक था; इसी तरह अमेरिका के साथ बढ़ती रणनीतिक साझेदारी भी थी।
- इंडो-पैसिफिक अब भारतीय कूटनीतिक विमर्श में अच्छी तरह से स्थापित हो गया है, और इसका संस्थागत एंकर, क्वाड (QUAD) भी है, जो ऑस्ट्रेलिया, भारत, जापान और अमेरिका को एक साथ लाता है।

## भारतीय भू-रणनीति में यूरेशिया से यूरोप तक का सफर:

- "यूरेशिया" का विचार भारतीय रणनीतिक चर्चा में समान लोकप्रियता हासिल नहीं कर पाया है, लेकिन अब यह भारत की नयी राजनयिक शब्दावली का हिस्सा है।
- यदि जापान और अमेरिका ने "इंडो-पैसिफिक" को लोकप्रिय बनाया, तो रूस ने "यूरेशियन" विचार को आगे बढ़ाया है। रूस और चीन द्वारा संयुक्त रूप से निर्मित शंघाई सहयोग संगठन, यूरेशियाई विचार की संस्थागत अभिव्यक्ति थी।
- महाद्वीपीय एशिया में भारत की हिस्सेदारी, रूस के साथ उसके लंबे समय से चले आ रहे संबंधों और बहुध्रुवीय दुनिया की उसकी खोज को देखते हुए, भारत

एससीओ में शामिल होने के लिए उत्सुक था। इसका अभियान 2017 में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ जब यह SCO का पूर्ण सदस्य बन गया।

- लेकिन चीन के साथ भारत की गहराती समस्याओं, रूस और पश्चिम के बीच बढ़ते संघर्ष और गहराते चीन-रूस गठबंधन के बीच यूरेशिया पर भारत की सोच बदलने लगी।
- भारत की रुचि अब आंतरिक एशिया तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसका विस्तार यूरेशिया के सुदूर पश्चिमी कोने में यूरोप को भी शामिल करने तक हो गया है।

## यूरोपीय क्षेत्र: भारतीय भू-रणनीति का नया क्षेत्र

- उल्लेखनीय है कि स्वतंत्र भारत के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में यूरोप लंबे समय से एक उपेक्षित भौगोलिक क्षेत्र रहा है, लेकिन पिछले दशक में इसमें भी बदलाव आया है।
- उच्च-स्तरीय यात्रायें एक संकेत देते हैं। विदेश कार्यालय के अनुसार, पीएम मोदी ने पिछले 10 वर्षों में 27 बार यूरोप की यात्रा की है और 37 यूरोपीय राष्ट्राध्यक्षों और शासनाध्यक्षों की अगवानी की है।
- व्यापार एक और संकेत है। जबकि यूरोपीय संघ के साथ मुक्त व्यापार समझौता अस्पष्ट बना हुआ है, भारत और यूरोप के बीच वाणिज्य, निवेश, प्रौद्योगिकी और

लोगों का प्रवाह लगातार बढ़ रहा है। यूरोप भारत का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार और तीसरा सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य है।

- पिछले महीने, भारत ने चार छोटे लेकिन महत्वपूर्ण देशों - आइसलैंड, लिकटेंस्टीन, नॉर्वे और स्विट्जरलैंड द्वारा गठित EFTA के साथ एक मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए।
- पिछले दशक में द्विपक्षीय साझेदार के रूप में फ्रांस की बढ़ती राजनीतिक प्रमुखता और भारत के महान शक्ति संबंधों में सामूहिक यूरोप का बढ़ता महत्व देखा गया है।
- साथ ही व्यापक रूप से देखा जाये तो मध्य पूर्व या पश्चिम एशिया के माध्यम से भारत और यूरोप के बीच एक आर्थिक गलियारे (IMEC) की योजना, अब्राहम समझौता, गाजा युद्ध, अरब खाड़ी का उदय, संयुक्त अरब अमीरात और सऊदी अरब के साथ भारत की गहरी साझेदारी, आज लाल सागर क्षेत्र के बाहर लगभग 20 भारतीय नौसैनिक जहाजों की उपस्थिति, और अफ्रीका के साथ बढ़ती भागीदारी मध्य पूर्व, अफ्रीका, पूर्वी भूमध्यसागरीय और पश्चिमी हिंद महासागर का अधिक एकीकृत दृश्य तैयार कर रही है। अतीत में इन्हें अक्सर अलग श्रेणियों के रूप में देखा जाता था।

## दक्षिण एशिया, एक विचार जो खो गया:

- भारत की भौगोलिक शब्दावली के विस्तार के बीच, एक दुर्भाग्यपूर्ण हारा हुआ व्यक्ति है, "दक्षिण एशिया"। सार्क की विफलता ने भारत को पूर्वी उपमहाद्वीप में उप-क्षेत्रीय सहयोग और बंगाल की खाड़ी में अंतर-क्षेत्रीय सहयोग पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित किया है।

## भू-रणनीति में "क्षेत्र" निश्चित या जड़ भौगोलिक इकाइयाँ नहीं:

- भू-रणनीति में "क्षेत्र" निश्चित भौगोलिक इकाइयाँ नहीं हैं। क्षेत्रों को बनाने और बिगाड़ने में राजनीति, अर्थशास्त्र और विचारधारा की बड़ी भूमिका होती है। क्षेत्र भी लोचदार हैं; वे परिस्थितियों के आधार पर फैलते और सिकुड़ते हैं।
- कई परिचित क्षेत्र, "दक्षिण एशिया", "दक्षिण पूर्व एशिया", "पूर्वी एशिया", "एशिया-प्रशांत" - सभी पिछले आठ दशकों में राजनीतिक रूप से "आविष्कृत" किए गए थे। "इंडो-पैसिफिक" केवल नवीनतम है।

## भारत की भू-रणनीति के महत्व के उभरते नए क्षेत्र:

- जैसा कि हम आगे देखते हैं, दो नए भौगोलिक क्षेत्र - "ज़ोमिया" और "खुरासान" - भारतीय उपमहाद्वीप की पूर्वी और पश्चिमी सीमाओं पर बढ़ते दबाव के बीच हमारा अधिक रणनीतिक ध्यान आकर्षित कर सकते हैं।

- **"ज़ोमिया" क्षेत्र:**
  - ➢ पूर्व में, म्यांमार सेना देश के उत्तर में विपक्षी मिलिशिया के गठबंधन से हार रही है।
  - ➢ ऊपरी म्यांमार में संभावित राजनीतिक शून्य पूरे "ज़ोमिया" में परेशानी पैदा कर सकता है - एक ऐसे क्षेत्र के लिए अकादमिक शब्द जहां पूर्वोत्तर भारत, दक्षिण पश्चिम चीन और दक्षिण पूर्व एशिया की ऊंची भूमि मिलती है।
  - ➢ यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां केंद्रीकृत राज्य नियंत्रण परंपरागत रूप से कमजोर रहा है और यह अल्पसंख्यक आबादी से भरा है, जिनमें से कुछ औपचारिक राज्य सीमाओं के पार फैले हुए हैं।
- **"खुरासान" क्षेत्र:**
  - ➢ जातीय अशांति, हिंसक धार्मिक उग्रवाद की वापसी, और पाकिस्तान की पश्चिमी सीमा पर बढ़ते सैन्य तनाव, "खुरासान" क्षेत्र की स्थिरता पर सवाल उठाते हैं।
  - ➢ उल्लेखनीय है कि फ़ारसी में खुरासान का अर्थ उगते सूरज की भूमि है।
  - ➢ यह फारस की पूर्वी सीमा को संदर्भित करता है, जिसमें आधुनिक पाकिस्तान, अफगानिस्तान और मध्य एशिया के कुछ हिस्से शामिल हैं।

**साभार: द इंडियन एक्सप्रेस**

# ताइवान में भीषण भूकंप का आना और 'रिंग ऑफ फायर':

## परिचय:

- ताइवान में बुधवार की सुबह कम से कम 25 वर्षों में सबसे बड़े भूकंप की चपेट में आने से नौ लोगों की मौत हो गई और 1,000 से अधिक घायल हो गए। ताइवान की भूकंप निगरानी एजेंसी ने कहा कि भूकंप की तीव्रता 7.2 बताया है, जबकि अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (USGS) ने इसे 7.4 बताया है।

- भूकंप का केंद्र हुलिएन काउंटी से सिर्फ 18 किलोमीटर दक्षिण पश्चिम में स्थित है, जो पूर्वी ताइवान में स्थित है।

## भूकंप कैसे उत्पन्न होता है?

- भूकंप पृथ्वी की टेक्टोनिक प्लेटों के हिलने के कारण होने वाले झटकों के कारण होता है। ये प्लेटें पृथ्वी की सबसे ऊपरी परत जिसे क्रस्ट कहा जाता है, के अंदर

गहराई में होती हैं। जब पृथ्वी की सतह के दो प्लेटें एक दूसरे के विपरीत जाते हैं या रगड़ खाते हैं, तो उसकी वजह से भूकंप आता है।

- भूकंप केंद्र से उत्पन्न होता है, जो पृथ्वी की पपड़ी या क्रस्ट के अंदर एक जगह है। केंद्र के ठीक ऊपर पृथ्वी की सतह पर बिंदु उपरिकेंद्र है।

## ताइवान भूकंप के प्रति संवेदनशील क्यों है?

- विशेष रूप से, ताइवान भूकंप के प्रति संवेदनशील है क्योंकि यह प्रशांत "रिंग ऑफ फायर" के साथ स्थित है - जहां दुनिया के 90% भूकंप आते हैं।
- रिंग ऑफ फायर में टेक्टोनिक प्लेटों के लगातार खिसकने, टकराने या एक-दूसरे के ऊपर या नीचे जाने के कारण इतने सारे भूकंप आते हैं।
- ताइवान में दो टेक्टोनिक प्लेटों - फिलीपीन सागर प्लेट और यूरेशियन प्लेट - की परस्पर क्रिया के कारण भूकंप आते हैं।
- एक रिपोर्ट में कहा गया है कि ताइवान द्वीप और इसके आसपास के पानी में 1980 के बाद से 4.0 या उससे अधिक तीव्रता वाले लगभग 2,000 भूकंप और 5.5 से अधिक तीव्रता वाले 100 से अधिक भूकंप दर्ज किए गए हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

## रिंग ऑफ फायर क्या है?

- रिंग ऑफ फायर मूल रूप से सैकड़ों ज्वालामुखियों और भूकंप-स्थलों की एक श्रृंखला है जो प्रशांत महासागर के साथ चलती है। यह आकार में अर्धवृत्ताकार या घोड़े की नाल जैसा है और लगभग 40,250 किलोमीटर तक फैला हुआ है।
- यह संयुक्त राज्य अमेरिका, इंडोनेशिया, मैक्सिको, जापान, कनाडा, ग्वाटेमाला, रूस, चिली, पेरू और फिलीपींस सहित 15 और देशों से होकर गुजरती है।

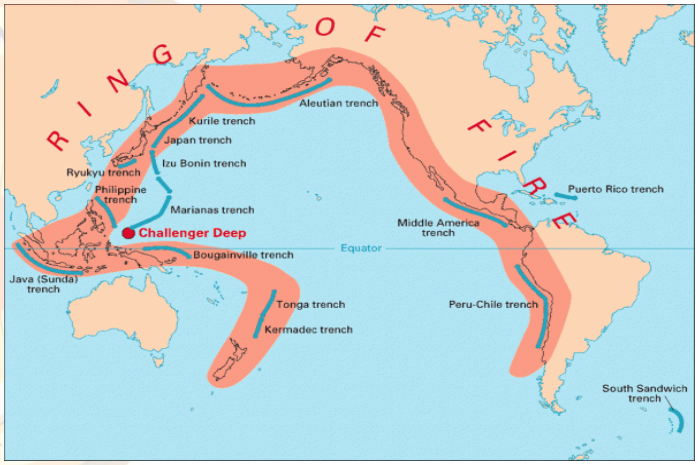

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

# भारत को विकसित देश बनाने में परमाणु ऊर्जा महत्वपूर्ण: IIMA का अध्ययन

## परिचय:

- भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद के शिक्षाविदों के एक अध्ययन रिपोर्ट ***"भारत के लिए संभावित नेट-ज़ीरो की दिशा में ऊर्जा परिवर्तन को सिंक्रनाइज़ करना: सभी के लिए सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा"*** में कहा गया है कि भारत को 2047 तक एक विकसित देश बनने और 2070 तक शुद्ध शून्य - या प्रभावी रूप से शून्य कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन हासिल करने की राह पर चलने के लिए, परमाणु ऊर्जा में निवेश और संबंधित बुनियादी ढांचे के विस्तार को महत्वपूर्ण रूप से प्राथमिकता देनी होगी।

- प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार कार्यालय और भारतीय परमाणु ऊर्जा निगम द्वारा वित्त पोषित अध्ययन के नतीजे 3 अप्रैल को सार्वजनिक किए गए।

- उल्लेखनीय है कि वर्तमान में, परमाणु ऊर्जा भारत के ऊर्जा मिश्रण का केवल 1.6% बनाती तथा कुल विद्युत उत्पादन का लगभग 3 प्रतिशत है।

## इस अध्ययन की आवश्यकता क्यों पड़ी?

- भारत के लिए शुद्ध-शून्य ऊर्जा टोकरी की दिशा में आवश्यक ऊर्जा परिवर्तन पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस की गई।
- तदनुसार, उपभोक्ता स्तर पर बिजली की लागत को कम करने और शुद्ध-शून्य उत्सर्जन के लक्ष्य के साथ बिजली के सभी स्रोतों के लिए एक इष्टतम मिश्रण तैयार करने के लिए कठोर तरीकों के साथ एक व्यापक अध्ययन करने के उद्देश्य से अध्ययन को मंजूरी दी गई थी।

## यह अध्ययन रिपोर्ट किन प्रश्नों का उत्तर खोजती है?

- यह रिपोर्ट भारत के ऊर्जा प्रक्षेप पथ से संबंधित प्रमुख प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करती है जैसे कि:
  - ➢ मानव विकास सूचकांक (HDI) के उच्च मूल्य को प्राप्त करने के लिए भारत को कितनी ऊर्जा की आवश्यकता है;
  - ➢ इसे प्राप्त करने के रास्ते क्या है;

- 2070 (हमारा घोषित शुद्ध-शून्य लक्ष्य वर्ष) तक इसके लिए ऊर्जा मिश्रण अनुमान क्या है;
- अंतिम उपयोगकर्ता के लिए बिजली की लागत क्या होगी;
- 2070 तक कार्बन उत्सर्जन कितना होगा;
- 2070 में शुद्ध-शून्य की ओर ऊर्जा परिवर्तन के लिए आवश्यक निवेश क्या होगा;
- 2070 में शुद्ध-शून्य प्राप्त करने की दिशा में ऊर्जा परिवर्तन में अन्य चुनौतियों और अवसरों (आरई एकीकरण, महत्वपूर्ण खनिजों की आवश्यकता, कार्बन कैप्चर उपयोग और भंडारण, प्राकृतिक गैस, इथेनॉल, हाइड्रोजन) का अनुमान।

- रिपोर्ट में अनुमान लगाने के लिए गणितीय मॉडल का उपयोग किया कि 2030 और 2050 तक ऊर्जा के विभिन्न स्रोतों के किस अनुपात की आवश्यकता होगी, 2070 तक, शुद्ध शून्य उत्सर्जन का एक आदर्श परिदृश्य।

## रिपोर्ट के प्रमुख निष्कर्ष:

- नेट-शून्य हासिल करने के लिए कोई जादू की छड़ी नहीं है। परिवर्तन के लिए हमारी ऊर्जा टोकरी में असंख्य प्रौद्योगिकियों के सह-अस्तित्व के साथ कई मार्गों को अपनाने की आवश्यकता है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- अनुमान है कि कोयला अगले दो दशकों तक भारतीय ऊर्जा प्रणाली की रीढ़ बना रहेगा।
- 2070 तक पर्याप्त परमाणु ऊर्जा और नवीकरणीय ऊर्जा (आरई) उत्पादन के बिना नेट-शून्य संभव नहीं है।
- 2070 तक शुद्ध-शून्य ऊर्जा प्रणालियों को प्राप्त करने के लिए, बिजली क्षेत्र को उससे पहले अच्छी तरह से डी-कार्बोनाइज करने की आवश्यकता होगी।
- 2070 में भारत का उत्सर्जन 0.56 बिलियन टन CO2 और 1.0 बिलियन टन CO2 के बीच होगा।
- 2020-2070 के दौरान वित्तीय आवश्यकताएं 150-200 लाख करोड़ रुपये (लगभग 2-2.5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर, या 40-50 बिलियन अमेरिकी डॉलर/वर्ष) की होगी। उल्लेखनीय है कि यह वित्तीय प्रवाह अंतर्राष्ट्रीय होना चाहिए।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

# MCQ:

**Q.1.** राजनयिक विमर्श में "इंडो-पैसिफिक" क्षेत्र के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. भारत में "इंडो-पैसिफिक" क्षेत्र का विचार पहली बार 2007 में भारतीय संसद में एक भाषण में जापानी प्रधानमंत्री शिंजो अबे द्वारा प्रस्तावित किया गया था।
2. उस समय भारत के राजनयिक विमर्श में इस विचार को हाथों-हाथ लिया गया।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

**Ans. (a)**

**Q.2.** हाल में चर्चा में रहे "रिंग ऑफ फायर" के संदर्भ में क्या सही है/हैं?

(a) रिंग ऑफ फायर मूल रूप से सैकड़ों ज्वालामुखियों और भूकंप-स्थलों की एक श्रृंखला है।

(b) यह प्रशांत महासागर के साथ चलती है।

(c) यह आकार में अर्धवृत्ताकार रूप से लगभग 40,250 किलोमीटर तक फैला हुआ है।

(d) उपर्युक्त सभी सही हैं।

**Ans. (d)**

**Q.3.** चर्चा में रहे "ज़ोमिया" क्षेत्र के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. अकादमिक दृष्टि से यह ऐसा क्षेत्र है जहां पूर्वोत्तर भारत, दक्षिण पश्चिम चीन और दक्षिण पूर्व एशिया की ऊंची भूमि मिलती है।
2. ऐसा क्षेत्र है जहां केंद्रीकृत राज्य नियंत्रण परंपरागत रूप से कमजोर रहा है और यह अल्पसंख्यक आबादी से भरा है।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

**Ans. (c)**

**Q.4.** हाल ही में भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद के शिक्षाविदों के एक अध्ययन रिपोर्ट प्रकाशित की है, जो भारत के 2047 तक विकसित भारत बनने के लक्ष्य के दौरान ऊर्जा संचरण पर केंद्रित है। इस रिपोर्ट के प्रमुख निष्कर्षों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 2070 तक नेट-शून्य हासिल करने के लिए परमाणु ऊर्जा एक 'जादू की छड़ी' के समान है।
2. 2070 तक पर्याप्त परमाणु ऊर्जा और नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन के बिना नेट-शून्य संभव नहीं है।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

**Ans. (b)**

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

**Q.5.** हाल ही में ताइवान में 25 वर्षों सबसे तीव्र भूकंप आया है। ताइवान अक्सर भूकंपों का सामना करता रहता है। ताइवान में अक्सर भूकंप आने का/के क्या कारण रहा/ रहे है/हैं?

(a) यह प्रशांत "रिंग ऑफ फायर" के साथ स्थित है।

(b) ताइवान में दो टेक्टोनिक प्लेटों - फिलीपीन सागर प्लेट और यूरेशियन प्लेट - की परस्पर क्रिया के कारण भूकंप आते हैं।

(c) विकल्प (a) और (b) दोनों।

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

**Ans. (c)**